शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक ३५ : नई दिल्ली : ४-१० दिसम्बर २०११

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी सानंद मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा करते हुए भीलवाड़ा के निकट पुर पधार गए हैं। स्थान-स्थान पर अहिंसा यात्रा का भव्य स्वागत हो रहा है। आचार्यवर मेवाड़ के इस अंचल में सघन परिभ्रमण कर रहे हैं। जहां एक भी श्रद्धा का घर है, उसके लिए पूज्यप्रवर दूरी को गौण कर रहे हैं। भीलवाड़ा और चित्तौड़ जिले के इस संभाग में अद्‌भुत धर्म जागृति देखने को मिल रही है।

संस्मरणों का वातायन : आचार्यश्री तुलसी

अक्षयतृतीया और क्षेत्रीय प्रतिलेखना का प्रारूप (८८०)

"६ मई १९९७, शुक्रवार। वि.सं. २०५४, वैशाख शुक्ला तृतीया। लोकोत्तर और लौकिक, दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण अक्षय तृतीया का पर्व। सेठ तोलाराम बाफणा ट्रस्ट के विशाल प्रांगण में अक्षय तृतीया का आयोजन। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी देश के विभिन्न भागों से वर्षीतप करनेवाले तपस्वी भाई-बहनों का आगमन। निर्धारित समय पर हम आयोजन-स्थल पर पहुंचे। स्कूल के मुख्य द्वार पर बाफणा परिवार के सदस्यों ने स्वागत किया। प्रवचन पंडाल में प्रवेश करते ही हजारों-हजारों लोगों ने एक स्वर से 'वन्दे गुरुवरम्' की ध्वनि के साथ वन्दना की। हमारे मंचासीन होने के बाद महाश्रमण मुनि मुदितकुमार ने महाप्राण ध्वनि और कायगुप्ति का प्रयोग कराया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। महाश्रमण, महाश्रमणी और महाप्रज्ञजी के वक्तव्य हुए। तपस्वी भाई-बहनों का परिचय दिया गया।

उपस्थित जनमेदिनी को सम्बोधित करते हुए मैंने कहा 'भयंकर गर्मी का मौसम, अपार जनसमूह और यह शान्ति सबको विस्मित करनेवाली है। मैं सर्वप्रथम प्रकृति को साधुवाद देता हूं, जिसने कई दिनों से अन्धड़-तूफान का रूप ग्रहण कर रखा था, किन्तु आज वह अनुकूल बनी हुई है। लोगों के मन में आशंका के बादल उमड़ रहे थे। उन्हें भय था कि तूफान और वर्षा आ गई तो क्या होगा? बन्धुओ! यह तपस्या का प्रभाव है। इसे आप समझ नहीं पाए। दूसरा साधुवाद मैं इस विशाल जनसमूह को देना चाहता हूं। इतनी गर्मी में भी सब लोग शामियानों के नीचे शान्तिपूर्वक बैठे हुए अध्यात्म रस का पान कर रहे हैं। हम आभारी हैं आचार्य भिक्षु के, जिन्होंने रुढ़िमुक्त धर्म का पंथ दिया। आचार्य भिक्षु का यह पंथ सबको कल्याण का पथ दिखानेवाला है। ऐसे उदारमना महामना आचार्य भिक्षु को करोड़ों लोगों की ओर से जितना साधुवाद दें, थोड़ा है। उन्हीं के प्रताप से हम इस रूप में साधना के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं।'

अक्षय तृतीया के सन्दर्भ में वर्षीतप की प्रासंगिक चर्चा करने के बाद मैंने कहा 'बाफणा स्कूल के इस विशाल मैदान में समवसरण-सा रंग लगा हुआ है। यह स्थान श्रावक तोलारामजी बाफणा का है। बाफणाजी बड़े श्रद्धालु श्रावक थे। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भंवरीदेवी भी आस्था के रंग में रंगी हुई हैं। ये श्रावकजी तथा अपना, दोनों का दायित्व निभा रही हैं। वर्ष का लगभग आधा समय उपासना में ही व्यतीत करती हैं। इनके चारों पुत्र आज यहां उपस्थित हैं। सभी में अच्छा उत्साह है। उपवास करना तपस्या है, वैसे ही बुराइयों को खत्म करने का प्रयत्न भी तपस्या है। देश में जो बुराइयां पनप रही हैं, उनसे संस्कृति की जड़ को खतरा हो रहा है। उनसे मुक्त होने के लिए जनता अणुव्रत के माध्यम से नैतिक मूल्यों को अपनाए, प्रेक्षाध्यान के द्वारा तनावमुक्त जीवन जीए तथा जीवनविज्ञान द्वारा भावी पीढ़ी को संस्कारी बनाने का प्रयास करे। ऐसा होने से ही जैन एकता

और जन एकता का सपना साकार हो सकता है।'

अक्षय तृतीया के कार्यक्रम में प्रेक्षा पुरस्कार, समाजसेवा पुरस्कार तथा जीवनविज्ञान पुरस्कार भी प्रदान किए गए। प्रेक्षा पुरस्कार श्रीमती सुशीला बहन शाह को दिया गया। स्वर्गीय नगीन भाई शाह की धर्मपत्नी सुशीला बहन प्रेक्षाध्यान की अच्छी साधिका है। वह दो दशकों से इस दिशा में प्रयत्नशील है। यह भी कोई संयोग की बात है कि प्रथम प्रेक्षा पुरस्कार नगीन भाई शाह को मिला और आज सुशीला बहन को मिला। यह एक श्रद्धाशील और संस्कारी महिला है। इसका घर प्रेक्षाध्यान का केन्द्र बना हुआ है।

समाजसेवा पुरस्कार कनकमलजी जैन को दिया गया। कनकमलजी एक समर्पित और मौनभाव से कार्य करनेवाले श्रावक हैं। विनयपुरम् (मेवाड़) में चल रहे ग्रामीण महिला विद्यालय में ये पूरी निष्ठा से लगे हुए हैं। ऐसे अणुव्रती और समाजसेवी व्यक्ति को समाजसेवा पुरस्कार देकर समाज ने सही मूल्यांकन किया है।

जीवनविज्ञान पुरस्कार मोतीलालजी बैद (नोखा) को दिया गया। मोतीलालजी सुपरिचित श्रावकों में एक हैं। श्रद्धा की दृष्टि से ये एक उदाहरण हैं। इनमें कार्य करने की गहरी धुन है। पक्षाघात की बीमारी का नाम लेते ही व्यक्ति सहम जाता है। इनके शरीर पर पक्षाघात का सतरह बार आक्रमण हुआ है। इन्होंने अपने श्रद्धाबल से हर बार बीमारी को पछाड़ा और अपना जीवन अणुव्रत एवं जीवनविज्ञान को समर्पित कर दिया। ऐसे व्यक्ति को दिया गया पुरस्कार स्वयं पुरस्कृत हुआ है।

इस अवसर पर एक और नए पुरस्कार अणुव्रत लेखक पुरस्कार की घोषणा की गई। घोषणा के साथ ही यह भी निर्णीत हो गया कि इस वर्ष का पुरस्कार अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय धर्मचन्द चौपड़ा को दिया जाएगा।

आज के कार्यक्रम में मेजर जनरल श्री उग्रसेन यादव जी.ओ.सी. मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने तपस्वी भाई-बहनों के प्रति अपनी शुभकामनाएं व्यक्त कीं। कार्यक्रम में उपस्थित तपस्वियों की संख्या दो सौ तीस (२३०) बताई गई। महाप्रज्ञजी ने उनके हाथ से भिक्षा ग्रहण की, उस समय का दृश्य बड़ा मनोहारी बन गया। अक्षय तृतीया का कार्यक्रम बहुत भव्य रहा। जनता की भीड़ भी दर्शनीय थी। दिनभर बाफणा स्कूल में रहे। मध्याह्न में साध्वीप्रमुखा के निवेदन पर साध्वियों की सामूहिक गोष्ठी की। साधुचर्या में जागरूकता की प्रेरणा के साथ व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया। साध्वियों के उत्फुल्ल चेहरे उनकी मानसिक प्रसन्नता के साक्षी बन रहे थे। उन्हें जब कभी निकट सान्निध्य या प्रशिक्षण प्राप्त करने का मौका मिलता है, उनका उल्लास बहुगुणित हो जाता है। सायंकाल तेरापंथ भवन में लौट आए। अभी हम मूल बिल्डिंग में ही जमे हैं।

१० मई, शनिवार। आज प्रातःकालीन प्रवचन के समय मुनि सुखलाल ने जैविभा मान्य विश्वविद्यालय के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। महाप्रज्ञजी ने अपने वक्तव्य में कहा 'वर्तमान युग में ज्ञान का विकास उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। हर विषय में दक्षता भी प्राप्त की जा रही है। ज्ञान की विविध धाराओं में विकास के बावजूद जैनविद्या के विकास का आज भी अभाव है। अपेक्षित विकास नहीं हो पा रहा है। दिगम्बर समाज में आज भी जैन विद्वान दृष्टिगोचर होते हैं, किन्तु श्वेताम्बर समाज में जैन मनीषी बहुत कम हैं। यह एक निर्विवाद तथ्य है कि उच्च शिक्षा तथा ज्ञान-विज्ञान के विकास के बिना देश व समाज कभी आगे नहीं बढ़ सकता। जैन विद्या में विज्ञान के महान रहस्य समाहित हैं और उनमें जीवन के समाधायक तत्त्व भी हैं। उन्हें व्यापकता देने के लिए जैन विद्या को शिक्षा के साथ जोड़ना होगा। जैन विद्वानों के अभाव में विश्वविद्यालय के जैन चेयर खाली पड़े हैं, जबकि विदेशी विद्वानों का जैनदर्शन के प्रति रुझान बढ़ रहा है। मैं जैन श्रावक समाज से कहना चाहता हूं कि वे इस दिशा में गंभीरता से सोचें और सलक्ष्य जैन विद्वान तैयार करने का प्रयत्न करें। सबसे बड़ी अपेक्षा तो यह है कि जैन लोग अपनी सन्तानों को जैन विद्या में नियोजित करें अथवा प्रतिभाशाली छात्रों को गोद लेकर जैन विद्या के अध्ययन की दिशा में संयोजित करें।'

प्रवचन के उपसंहार में मैंने भी जैन विद्वान तैयार करने की प्रेरणा देते हुए कहा 'संसार में सैकड़ों-सैकड़ों विश्वविद्यालय हैं। पर जैनों का एकमात्र विश्वविद्यालय है जैनविश्वभारती, मान्य विश्वविद्यालय। इसमें जैन विद्या के विकास और अनुसन्धान का मुक्त वातावरण है। यद्यपि वर्तमान की शिक्षा अर्थ से अधिक जुड़ी हुई है। इस अर्थप्रधान शिक्षा ने शिक्षा के मूल उद्देश्य को विस्मृत कर दिया है। अर्थ आवश्यकता की सीमा को लांघकर जब आकांक्षा के आकाश-सा विशाल बन जाता है, तब विवेक चेतना लुप्त हो जाती है। मैंने विकास के कई

स्वप्न देखे हैं। उनमें एक स्वप्न है जैन विद्या में पारंगत विद्वान तैयार करना। प्रस्तुत स्वप्न कब और कैसे पूरा हो, यह श्रावक समाज के चिन्तन पर निर्भर करता है। जैनशासन की प्रभावना, सुरक्षा और विकास का दायित्व साधु और श्रावक दोनों पर है। मैं चाहता हूं कि जैनदर्शन में वर्णित जीवजगत, विज्ञान और अध्यात्म के रहस्यों को संसार के सामने प्रस्तुत किया जाए। यह तभी संभव है, जब आप जैन दर्शन के मर्मज्ञ विद्वान बनेंगे, दार्शनिक बनेंगे और प्रवक्ता बनेंगे।'

१३ मई, मंगलवार। ११ और १२ मई को तेरापंथ विकास परिषद की संगोष्ठी आयोजित की गई। दो दिवसीय संगोष्ठी में विकास परिषद के संयोजक, नौ इकाइयों के समन्वयक, जय तुलसी फाउण्डेशन के अध्यक्ष तथा कुछ विशेष व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया। हुलासजी गोलछा, बनेचन्दजी मालू आदि काफी व्यक्ति आए। दो दिवसीय संगोष्ठी में संस्थाओं की गति-प्रगति के बारे में पूरी जानकारी दी गई। संघीय विकास की दृष्टि से भावी संभावनाओं को मद्देनजर रखते हुए कुछ महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर चिन्तन हुआ। संगोष्ठी अच्छी चली। उपस्थिति भी अच्छी रही। कुछ महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए। दिल्ली कार्यालय ठीक बने, यह निर्णय हो गया। लगता ऐसा है मानो बन ही गया। कुछ और भी अच्छे निर्णय हुए। हुलासजी गोलछा अब भी यहीं हैं। गुलाबजी चिंडालिया नहीं आ सके, उनकी कमी रही। कल आ रहे हैं, ऐसी सूचना है। संभवतः हुलासजी भी तब तक रुक जाएं। आज उनके साथ अच्छी चर्चा हुई।

भगवान महावीर की २६००वीं जन्मजयन्ती सामने आ रही है। उसे व्यापक रूप में मनाया जाए, यह अपेक्षा है। पर महावीर मेमोरियल के नाम पर मनाया जाए तो ठीक रहे। सभी सम्प्रदायों के लोग अपने-अपने स्तर पर महावीर जयन्ती मनाते रहे हैं। यदि बड़े स्तर पर कोई आयोजन करना हो तो विचारों को उदार रखना ही होगा।

१५ मई, गुरुवार। आजकल प्रातःकाल महाप्रज्ञजी 'ऋषभायण' पर प्रवचन कर रहे हैं। उनके बाद मैं अतिमुक्तक के आख्यान का वाचन करता हूं। प्रवचन के समय जनता की उपस्थिति उल्लेखनीय रहती है। आज यौगलिकों की जीवनशैली पर चर्चा करते हुए मैंने कहा 'यह सहज, सरल और स्वस्थ जीवनशैली का उदाहरण है। स्वस्थ जीवनशैली की कल्पना तब तक बेकार है, जब तक मनुष्य के चिन्तन में बदलाव नहीं आता। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि अस्तव्यस्त और भागदौड़ की जिन्दगी ने बच्चों का बचपन छीन लिया और युवकों का यौवन गायब कर दिया। अवस्था प्राप्त होना नियति है, पर अवस्था से पहले बुढ़ापा आना अस्तव्यस्त जीवनशैली की देन है।'

अपनी बात को प्रासंगिक परिवेश देते हुए मैंने कहा 'महाश्रमण मुदित आज छत्तीसवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है, फिर भी इसके चेहरे पर बचपन झलक रहा है। जब यह दीक्षा लेकर आया, छोटा-सा बच्चा था। देखते-देखते पैंतीस वर्ष का हो गया। इसे भी एक योग ही कहना चाहिए कि हमारी महाश्रमणी अपने जीवन के छप्पन वर्ष पूरे करनेवाली है और महाप्रज्ञजी सतहत्तरवां वर्ष पार करनेवाले हैं। तीनों का एक-दूसरे के मध्य लगभग इक्कीस-इक्कीस वर्ष का अन्तराल है। तीनों ही अल्पायु में दीक्षित हुए। ये ज्ञान, दर्शन और चारित्र का विकास कर आगे बढ़े हैं, इसकी मुझे प्रसन्नता है।'

१८ मई, रविवार। प्रातःकालीन प्रवचन में व्यवस्था और नेतृत्व के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए मैंने कहा 'जहां समाज है, वहां व्यवस्था अनिवार्य है। हजारों लोग प्रवचन सुननेवाले हों तो समवसरण के निर्माण की व्यवस्था की जाती है। व्यवस्था न हो तो इतने लोग कहां बैठे और कैसे सुने। व्यवस्था का समुचित प्रबन्धन वही कर सकता है, जो कुशल नेता हो। वह नेता सफल होता है, जिसमें नेतृत्व की क्षमता हो। नेतृत्वकला के अनेक घटक हैं, उनमें कुछ मुख्य बिन्दु ये हो सकते हैं सत्यनिष्ठा, न्यायप्रियता, पक्षपातरहित दृष्टिकोण, व्यक्तिवादी मनोवृत्ति से ऊपर रहकर व्यापक रूप में जनहित साधने का लक्ष्य, निर्णायक क्षमता, सामंजस्य साधने की कला और दूरदर्शिता। परिस्थितियां हर व्यक्ति के जीवन में आ सकती हैं। जो उन्हें सहन करना जानता है, वही महान होता है।'

क्षेत्र प्रतिलेखना और परिवार प्रतिलेखना के कतिपय बिन्दु

जिन क्षेत्रों में साधु-साध्वियों और समण-समणियों का प्रवास होता है, वहां धार्मिक दृष्टि से जागृति की लहर-सी आ जाती है। साधु-साध्वियां अपनी ओर से पूरा परिश्रम करती हैं। श्रावक समाज ज्ञान, दर्शन, चारित्र

और तप की आराधना में अपनी शक्ति का सदुपयोग करता रहे, यह साधु-साध्वियों की प्रेरणा रहती है। इसी आधार पर सम्पूर्ण देश में हमारा नेटवर्क चलता है। इस बार हमने सलक्ष्य कुछ बिन्दुओं का निर्धारण किया है, जो विहार क्षेत्र तथा चातुर्मासिक क्षेत्र की प्रतिलेखना के आधार बन सकते हैं। उन बिन्दुओं को यहां प्रस्तुत किया जा रहा है

१. तेरापंथ भवन में जैन प्रतीक और तेरापंथ प्रतीक है या नहीं?
२. तेरापंथ भवन में संघीय पुस्तकालय है या नहीं?
३. संघीय पुस्तकालय में प्राथमिक साहित्य है या नहीं?
४. साहित्य का समुचित उपयोग होता है या नहीं?
५. सप्ताह में कम-से-कम एक बार सपरिवार धर्मस्थान में धर्मोपासना का क्रम चलता है या नहीं? (क्षेत्र में साधु-साध्वियां हों तो दर्शन, उपासना, प्रवचनश्रवण आदि का क्रम रहे, अन्यथा जप, साहित्य-वाचन, विज्ञप्ति-वाचन आदि कोई भी प्रयोग हो सकता है।)
६. घर-घर में तेरापंथ की पहचान के तीन घोष कलात्मक रूप में अंकित हैं या नहीं? निर्धारित घोष अग्रांकित हैं
   - तेरापंथ की क्या पहचान : एक गुरु और एक विधान
   - तेरापंथ की क्या पहचान : धर्म अहिंसा-त्याग-प्रधान
   - तेरापंथ की क्या पहचान : व्यसनमुक्त जीवन सन्धान
७. घर-घर में बच्चों के संस्कार-निर्माण की दृष्टि से णमुक्कार महामंत्र का अंकन, तीर्थंकरों एवं आचार्यों तथा जैन संस्कृति के प्रतीक चिन्ह हैं या नहीं?
८. साधु-साध्वियों के व्यक्तिगत चित्र किसी घर में न रहें, इस विषय में संघीय नीति की जानकारी देना।
९. तेरापंथ के मौलिक सिद्धान्तों, धर्मसंघ की मर्यादाओं, परम्पराओं और गतिविधियों के बारे में अच्छे ढंग से जानकारी देना।
१०. तेरापंथ-प्रबोध, सम्बोध और श्रावक-सम्बोध इन तीन पुस्तकों के सलक्ष्य पठन-पाठन, संगान और कंठीकरण की प्रेरणा देना।
११. तेरापंथी परिवारों में प्रत्येक सदस्य का जीवन व्यसनमुक्त रहे, इस दृष्टि से प्रयत्नशील रहना।

२३ मई, शुक्रवार। प्रायः प्रातःकालीन प्रवचन में जाना होता है। प्रासंगिक प्रवचन के साथ अतिमुक्तक का आख्यान चलता है। आज विद्यार्थियों का कार्यक्रम था। संस्कार-निर्माण की आवश्यकता पर बल देते हुए मैंने कहा 'अच्छे-बुरे संस्कारों के आधार पर व्यक्ति बड़ा-छोटा बनता है। संस्कार-निर्माण के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी घटक हैं माता, गुरु, परिवार और मित्र। इन चारों का समुचित योग हो और सुसंस्कारों का सुयोग मिले तभी स्वस्थ व्यक्तित्व का निर्माण संभव है। बच्चे देश की सबसे कीमती सम्पत्ति है। इस संपत्ति की सुरक्षा और संवर्धन में जागरूकता रखी जाए तभी भावी पीढ़ी का सही विकास हो सकता है। जागरूकता के अभाव में इस पीढ़ी का जीवन कब विकृत हो जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता।'

२५ मई, रविवार। परिषद की छटा प्रतिदिन दर्शनीय होती है। रविवार के दिन वह कुछ अधिक प्रभावी बन जाती है। प्रवचन सुनने के लिए आनेवाले कुछ पाना चाहते हैं। उनके लिए सर्वाधिक अभीष्ट तत्व है सुख-शान्ति। सुख का रास्ता क्या है? इस विषय पर बोलते हुए मैंने कहा 'सुखी जीवन वह जीता है, जो कषाय को शान्त रखता है। आज की युवापीढ़ी उपशान्त कषाय बनकर जीना सीखे, यह आवश्यक है। हमारे महाप्रज्ञजी के जीवन में कषाय की अल्पता है। शासना करते हुए भी ये संयत हैं।'

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए मैंने उत्तराध्ययन आगम का एक प्रेरक प्रसंग प्रस्तुत करते हुए कहा

'अधुवे असासयंमि संसारंमि दुक्खपउराए।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं जेणाहं दोग्गइं न गच्छेज्जा॥

अध्रुव, अशाश्वत और दुक्खबहुल संसार में ऐसा कौन-सा कर्म-अनुष्ठान है, जिससे मैं दुर्गति में न जाऊं?

मनुष्य को दुर्गति से बचानेवाला पथ है शान्ति का। शान्ति तभी संभव है, जब व्यक्ति स्वयं को संयोगों से मुक्त रखे। जहां संयोग है, वहां वियोग भी घटित होता है। यह वियोग ही व्यक्ति को व्यथित करता है।

जहां प्रिय-वियोग व्यक्ति को व्यथित करता है, वहां अप्रिय का संयोग भी व्यक्ति को बेचैन बना देता है। दुःख का मूल कारण है मेरापन। यद्यपि यह सचाई है कि मेरापन छूट नहीं सकता। यदि वह छूट जाए तो यह संसार भी नहीं रह पाएगा। पर उसको कम किया जा सकता है। आसक्ति व ममत्व को कम करना ही सच्चे सुख का रास्ता है। कषायशमन और आसक्तिविजय की साधना ही सुख का सर्वोत्तम मार्ग है।"

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण आमेट की ओर

अनावश्यक हिंसा से बचें

२२ नवम्बर। आज मार्गवर्ती खेड़ा व बापूनगर ढाणी--इन दो गांवों में संक्षिप्त उद्‌बोधन के बाद लगभग छह किमी. का विहार कर आचार्यवर महेन्द्रगढ़ पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय माध्यमिक विद्यालय में हुआ। वहां आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में महिला मंडल की बहनों के द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति के बाद पूर्व सरपंच श्री शंकरसिंह राठौड़ ने गांव की ओर से पूज्यप्रवर का स्वागत किया। मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी, मंत्री मुनिश्री एवं महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के सामयिक अभिभाषण हुए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'हम अहिंसा यात्रा के साथ गांवों और कस्बों में जा रहे हैं। आचार्य महाप्रज्ञ ने दीर्घकालीन अहिंसा यात्रा की। वे कहा करते थे कि यात्रा के माध्यम से हिंसा के कारणों की खोज की जा रही है। वस्तुतः हिंसा को समझना आवश्यक है। हिंसा को समझे बिना उससे बच सकना संभव नहीं है।

हिंसा के तीन आयामों--आरंभजा, विरोधजा और संकल्पजा हिंसा की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'साधु हिंसा से सर्वथा विरत होता है। गृहस्थ के लिए हिंसा को पूर्ण रूप से छोड़ पाना कठिन होता है। किन्तु अनावश्यक हिंसा से तो वह बच ही सकता है। अहिंसा की अनुपालना हेतु मुनि के लिए माधुकरी भिक्षावृत्ति का विधान है। खेती-बाड़ी से स्थावर व त्रस जीवों की होने वाली हिंसा इसी का अंग है। रक्षा व प्रतिरोध हेतु होने वाली हिंसा विरोधजा हिंसा है। संकल्पजा हिंसा में न तो खेती-बाड़ी का कोई प्रश्न है, न ही प्रतिरक्षा का। इसलिए संकल्पजा हिंसा से तो हर किसी को बचना चाहिए।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'अहिंसक चेतना के जागरण हेतु हर व्यक्ति में अनुकंपा की चेतना जागे और हर व्यक्ति नशामुक्त जीवन जीने का अभ्यास करे। महेन्द्रगढ़ में गुरुदेव तुलसी पधारे थे। सन् २००४ में कुछ देर के लिए आचार्य महाप्रज्ञ का भी आगमन हुआ और आज हम आए हैं। यहां के सोहनजी मेहता केन्द्र की उपासना करते हैं। इनके जोड़ीदार शांतिलालजी बोरदिया (वर्तमान में मुनि शांतिप्रियजी) तो अब साधु बन गए। यहां के श्रावक हरकलालजी अच्छे श्रावक थे। उन्हें संथारे में दीक्षा लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। महेन्द्रगढ़वासी अपने जीवन में शांति एवं सौहार्द की भावना विकसित करें।'

कार्यक्रम में महेन्द्रगढ़ ठिकाणे के ठाकुर प्रतापसिंह राठौड़, सरपंच श्रीमती नंदूदेवी पंवार, पूर्व सरपंच मनोहरलाल नाहर आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया। स्थानीय स्कूल में मुनि पुलकितकुमारजी के वक्तव्य के बाद पूज्यवर ने नशामुक्ति का संकल्प करवाया। रात्रि में भी कार्यक्रम चला। पांच सदस्यों वाले श्रद्धा के दो घरों के महेन्द्रगढ़ के मूल बारह घरों (लगभग चालीस चौके) के लगभग पचहत्तर लोग एक दिन के प्रवास में आए। आचार्यवर ने सभी घरों का स्पर्श किया। सबमें अपूर्व उल्लास था।

गार्हस्थ्य में भी हो आत्मिक धर्म की आराधना

२३ नवम्बर। आज प्रातः परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने सोनियाणा के लिए विहार किया। मार्ग में छोटाखेड़ा भुणास में ग्रामीणों को पूज्यवर से पावन प्रेरणा प्राप्त हुई। मार्ग के दोनों ओर स्थित सिरामिक्स टाइल्स फैक्ट्रियों के कर्मचारी पूज्यवर के दर्शन कर प्रसन्नता की अनुभूति कर रहे थे। एक स्थान पर बड़ी संख्या में एकत्रित कर्मचारियों को पूज्यवर ने नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान की। अनेक व्यक्तियों ने आचार्यवर से बीड़ी, तम्बाकू आदि छोड़ने का संकल्प स्वीकार किया। मातृकुंडिया बांध को भीलवाड़ा के मेजा बांध से जोड़ने वाली मेजा फीडर

नहर के पार्श्ववर्ती कच्चे पथ से होते हुए १३.०१ किमी. का विहार कर आचार्यवर सोनियाणा के स्थानीय राजकीय माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आचार्यवर के पदार्पण से ग्रामवासियों का उल्लास दर्शनीय था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में सहाड़ा क्षेत्र के विधायक श्री कैलाश त्रिवेदी, कृषि मंडी सोनियाणा के अध्यक्ष श्री विष्णुकुमार सुवालका एवं श्री शंकरसिंह राणावत ने अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने संबोधि के सातवें अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'गृहस्थ के लिए दो प्रकार के धर्म होते हैं--आत्मिक और लौकिक, जबकि साधु के लिए एक आत्मिक धर्म ही होता है। संवर और निर्जरा की साधना आत्मिक धर्म है। जिसके द्वारा आत्मा की अनुकंपा, रक्षा, कल्याण और शुद्धि होती है, वह आत्मिक धर्म है। जिसके द्वारा शरीर, परिवार, समाज आदि का पोषण होता है और जिसे लोक व्यवहार में अच्छा माना जाता है, वह लौकिक धर्म है। गार्हस्थ्य में केवल आत्मिक धर्म से काम नहीं चलता। गृहस्थ को अपना पारिवारिक और सामाजिक कर्तव्य भी निभाना होता है। यदि वह अपने इस कर्तव्य से विमुख बनता है तो कुछ कठिनाई भी हो सकती है। किन्तु गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी कुछ अंशों में संवर और निर्जरा की साधना होती रहती है तो आत्मा कल्याण की दिशा में अग्रसर हो सकती है।' पूज्यवर ने कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्त रहने का संकल्प करवाया।

सोनियाणा में एक तेरापंथी परिवार सहित बाईस जैन परिवार हैं। चार भाइयों का बाफणा परिवार अपने गांव में अपने आराध्य को पाकर प्रमुदित था। पूज्यवर ने सायंकालीन आहार के पश्चात सभी जैन घरों का स्पर्श किया। सभी परिवारों को पूज्यवर की उपासना का भी अवसर प्राप्त हुआ। रात्रिकालीन कार्यक्रम के दौरान पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया। आचार्यवर का रात्रिकालीन प्रवास श्री सुरेशजी बाफणा के निवास पर हुआ। पूज्यवर के अनुग्रह को प्राप्त कर सुरेशजी आदि परिजन हर्षविभोर थे।

एक परिवार : पांच किमी. का अतिरिक्त विहार

२४ नवम्बर। महातपस्वी आचार्यवर की इस मेवाड़ यात्रा में ऐसे अनेक प्रसंग आए हैं, जब लंबा मार्ग तय करते हुए भक्तों की आस्थासिक्त भावना को स्वीकार कर भक्तवत्सल आचार्यवर ने उन्हें तृप्त किया। कभी-कभी यह दूरी दस किमी. और उससे भी अधिक रही है। यद्यपि आज का विहार आठ किमी. ही था, किन्तु मार्ग से ढाई किमी. भीतर स्थित झबरकिया गांव के मात्र एक तेरापंथी परिवार की भावना को पूर्ण करने के लिए पूज्यप्रवर वहां पधारे। आचार्यवर की इस कृपावृष्टि में अभिस्नात बंशीलालजी पीतलिया का परिवार अत्यन्त आह्लादित था। आचार्यवर उनके घर में पधारे और उन्हें उपासना कराई। बंशीलालजी ने बताया--हमारे गांव में प्रथम बार किसी आचार्य का पदार्पण हुआ है। घर के बाहरी चौक में बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों को आचार्यवर का पावन पाथेय प्राप्त हुआ। अनेक ग्रामीणों ने बीड़ी, गुटखा, तम्बाकू आदि का परित्याग किया।

नोट नहीं, खोट दो

झाबरकिया गांव में सुखराम जाट नाम का एक भाई हाथ में थाली लेकर आचार्यवर के निकट आया। उस थाली में २५०० रुपये रखे हुए थे। आचार्यवर के चरण स्पर्श करते हुए चौधरी सुखराम उस थाली को पूज्यचरणों के निकट रखकर जाने लगा। आचार्यवर ने उसे रोका और समझाते हुए कहा--'भाई! हम रुपये नहीं लेते। क्या तुम नशा करते हो?' भाई ने स्वीकृति में अपना सिर हिलाया। पूज्यवर ने पूछा--'बीड़ी पीते हो?' उसने कहा--'नहीं।' पूज्यवर ने पुनः पूछा--'शराब पीते हो?' उसने कहा--'हां, मैं बीयर पीता हूं।' पूज्यवर ने कहा--'क्या तुम इसे छोड़ सकते हो?' उसने कहा--'आप कहें तो मैं छोड़ दूंगा।' आचार्यवर ने उसे शराब पीने का परित्याग करवा दिया। इस प्रकार वह अपने नोट पुनः ले गया और अपनी खोट श्रीचरणों में चढ़ा गया।

अहिंसा यात्रा चित्तौड़ जिले में

झाबरकिया में पदार्पण से पूर्व आचार्यवर ने भीलवाड़ा जिले से कुछ दिनों के लिए चित्तौड़गढ़ जिले में प्रवेश

किया। श्रद्धालुओं ने जोश के साथ अपने जिले की सीमा पर पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। सांवरिया गोशाला का स्पर्श करते हुए आचार्यप्रवर मार्गवर्ती रेवाड़ा गांव के गुरुकुल शिक्षण संस्थान में पधारे। यहां एक संक्षिप्त कार्यक्रम में पोखरना परिवार की बहनों ने स्वागत गीत का संगान किया। पूज्यवर ने बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों को धार्मिक संबोध प्रदान किया। आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक ग्रामीणों ने बीड़ी, तम्बाकू आदि का परित्याग किया। गांव का एकमात्र तेरापंथी पोखरना परिवार पूज्यवर के पदार्पण से हर्षाप्लावित था। आचार्यवर ने परिवार को उपासना का अवसर प्रदान कर धार्मिक प्रेरणा दी और परिवार के तीनों भाइयों के घरों का भी स्पर्श किया। इस प्रकार आज तेरह किमी. से अधिक का विहार कर आचार्यवर लगभग ग्यारह बजे मान्यास के स्थानीय राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में पधारे। पूज्यवर का आज का प्रवास यहीं हुआ।

आचार्यवर का स्वागत कर मान्यास गांव के आबालवृद्ध प्रफुल्लित थे। सर्वत्र उत्सव का-सा माहौल दृष्टिगोचर हो रहा था। प्रातःकालीन कार्यक्रम में उदयपुर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री शांतिलाल सिंघवी ने अपने पैतृक गांव में आचार्यवर का स्वागत किया। क्षेत्र के पूर्व विधायक श्री अर्जुन जिनगर ने चित्तौड़गढ़ जिले में आचार्यवर का स्वागत करते हुए जिले में प्रवास के दौरान प्रतिदिन दर्शन करने का संकल्प व्यक्त किया। राशमी के पूर्व प्रधान श्री शिवशंकर दाधीच ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी अभिभाषण हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अहिंसा एक ऐसा धर्म है, जो शाश्वत है। हिंसा का मार्ग अशान्ति और ह्रास की ओर ले जाता है। अहिंसा की प्रतिष्ठापना वहीं हो सकती है, जहां अनुकंपा की चेतना का विकास होता है। हमारी अहिंसा यात्रा का मुख्य लक्ष्य भी यही है। किसी को चित्त समाधि मिले, वैसा प्रयास करें। किन्तु किसी को कष्ट न पहुंचाएं। यदि अहिंसा धर्म जीवन में अवतरित हो जाता है तो आत्मा एक सुन्दर बगिया बन जाती है।' आचार्यवर ने कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्त रहने का संकल्प करवाया।

मान्यास में तीन तेरापंथी परिवार हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात आचार्यप्रवर ने उनके घरों का स्पर्श किया। रात्रिकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर की प्रेरणा से बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने नशामुक्त रहने का संकल्प लिया। कार्यक्रम के पश्चात स्थानीय तेरापंथी परिवारों को पूज्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ।

राशमी में भव्य स्वागत

२५ नवम्बर। आज पूज्य आचार्यवर ने प्रातः मान्यास से राशमी के लिए विहार किया। मार्गवर्ती सांकली गांव में पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। मध्यवर्ती सोमी गांव में भी आचार्यवर का पदार्पण हुआ। इस गांव में तीन स्थानकवासी जैन परिवार हैं। आचार्यवर की सन्निधि प्राप्त कर ग्रामवासियों ने कृतार्थता की अनुभूति की। संक्षिप्त कार्यक्रम में आचार्यवर ने जनता को धार्मिक पाथेय प्रदान किया। पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने बीड़ी, गुटखा, तम्बाकू आदि के सेवन का परित्याग किया। आचार्यवर स्थानीय तीनों जैन घरों में भी पधारे। यहां से प्रस्थान कर आचार्यवर बनास नदी के ऊपर बने पुल से होते हुए राशमी पधारे। अहिंसा यात्रा के साथ आचार्यवर का पदार्पण न केवल तेरापंथी, अपितु अन्य जैन और जैनेतर लोगों के लिए भी हर्षोल्लास का विषय बना हुआ था। विभिन्न समुदाय और वर्गों द्वारा लगाए गए स्वागत द्वार और उन पर लिखे गए भावपूर्ण शब्द उनकी प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दे रहे थे। जनता की भावपूर्ण अभिवंदना को स्वीकार करते हुए पूज्य आचार्यवर स्थानीय राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी एवं मंत्री मुनिश्री के प्रेरक अभिभाषण हुए। कोटा के श्रम न्यायाधीश श्री प्रकाशजी पगारिया ने अपने श्रद्धासिक्त भावों को अभिव्यक्ति दी। प्रदेश भाजपा के महामंत्री एवं चित्तौड़ के पूर्व सांसद श्रीचन्दजी कृपलानी ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए कहा--'यदि देश को पुनः विश्वगुरु बनना है तो पूज्य आचार्यश्री का पथदर्शन हमें स्वीकार करना होगा। आपके बताए गए मार्ग पर चलकर ही देश सफल और सशक्त बन सकता है।'

चित्तौड़ के जिला कलक्टर श्री रवि जैन ने कहा--'आचार्यवर के दर्शन कर मैं तो धन्य हुआ ही, आपका

पावन स्पर्श पाकर समस्त चित्तौड़ की धरा धन्य हो गई। आपका पवित्र आगमन यहां के लिए वरदायी सिद्ध होगा।'

परमाराध्य आचार्यवर ने संबोधि के सातवें अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में उपस्थित विशाल जनमेदिनी को जाति, कुल, रूप, बल, ज्ञान, ऐश्वर्य, लाभ और तप का अहं न करने की प्रेरणा प्रदान की और राशमीवासियों को रश्मि के दो अर्थ (प्रकाश की किरण और लगाम) बताते हुए उन्हें जीवन की लगाम अपने हाथ में रखने और जीवन को ज्ञान-रश्मियों से प्रकाशित करने हेतु अभिप्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

राशमी में आठ तेरापंथी परिवार सहित लगभग अस्सी जैन परिवार हैं। मध्याह्न में तेरापंथी परिवारों और अनेक अन्य जैन परिवारों को पूज्यवर ने उपासना करवाई और उन्हें धार्मिक पाथेय प्रदान किया। सायंकालीन आहार के पश्चात आचार्यवर ने अधिकांश जैन घरों का स्पर्श किया। इस दौरान आचार्यवर स्थानीय तेरापंथ भवन में पधारे और भवन के दोनों तल का अवलोकन किया। रात्रिकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया। आचार्यवर का रात्रिकालीन प्रवास स्थानकवासी श्री सोहनलालजी पोखरना के निवास पर रहा।

सत्यवादी का होता है विश्वास

२६ नवम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने आज प्रातः राशमी के तेरापंथी श्रावकों के अनुरोध पर उनके घरों में पुनः पधार कर उनकी भावना को तृप्त किया। अनेक अन्य लोगों के घर भी पूज्य चरणों के स्पर्श से पावन बने। राशमी से चटावटी की ओर विहार के दौरान राशमी की सरपंच श्रीमती रेखा व्यास ने काफी दूर तक पैदल चलकर पूज्यवर की उपासना का लाभ लिया। मार्गवर्ती गंदरप और भोपालाई गांव में पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। भीमगढ़ के बाहर की ओर स्थित वीर तेजाजी मंदिर में भी पूज्यवर का पदार्पण हुआ। यहां बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों ने पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। आचार्यवर ने जनता को संबोध प्रदान करते हुए कहा--'हमारा कल का प्रवास यहीं (भीमगढ़) है। आप लोग कल की तैयारी करें। जो लोग नशा करते हैं, वे उसे छोड़ने का मानस बनाएं और कल जब हम यहां आएं तो नशा छोड़ने का संकल्प स्वीकार करें।'

आचार्यवर १२.०७ किमी. का विहार कर चटावटी पधारे। पूज्यवर की मंगल सन्निधि प्राप्त कर ग्रामवासी धन्यता की अनभूति कर रहे थे। सर्वत्र प्रसन्नता का वातावरण था। आचार्यवर का प्रवास स्थानीय राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'सत्य जीवन में आ जाता है तो एक बड़ी शक्ति, शुद्धि और आत्मबल प्राप्त हो जाता है। व्यक्ति थोड़ी कठिनाइयों को भले ही झेल ले, किन्तु झूठ बोलने से बचने का प्रयास अवश्य करे। क्रोध, लोभ, भय और हास्य झूठ बोलने के मुख्य कारण बनते हैं। व्यक्ति इन कारणों के परिहार का प्रयास करे। जो व्यक्ति सत्य की साधना करना चाहता है, उसे वाणी-संयम का अभ्यास करना चाहिए। यदि ऐसा होता है तो सत्य की साधना सुगम बन सकती है।'

चटावटी में सात तेरापंथ परिवारों सहित कुल दस जैन परिवार हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात परम श्रद्धेय आचार्यवर उनके घरों में पधारे और रात्रि में उन्हें पारिवारिक सेवा का अवसर प्रदान कर धार्मिक प्रेरणा दी। रात्रिकालीन प्रवचन में पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया। आचार्यवर ने उपस्थित जनता को ध्यान का प्रयोग भी करवाया।

जब विहार तीन का तेरह हुआ

२७ नवम्बर। आज प्रातः लगभग पांच किमी. चलकर पूज्यप्रवर लांगच पधारे। गांव का एकमात्र श्रद्धालु खाब्या परिवार की प्रसन्नता का पार नहीं था। उल्लेखनीय है--इस परिवार के वरिष्ठ सदस्य श्री मांगीलालजी खाब्या ने वर्षों पूर्व तेरापंथ धर्मसंघ के मर्यादा महोत्सव को देखकर तेरापंथ की गुरुधारणा स्वीकार की और इस कारण खाब्याजी समाज से बहिष्कृत कर दिए गए। किन्तु खाब्याजी ने दृढ़ता का परिचय देते हुए अपनी स्वीकृत

आस्था पर आंच नहीं आने दी। आचार्यप्रवर ने सभी जैन परिवारों के घरों में पगल्या किया। वहां आयोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में गांव की बहनों ने 'घर कूचां घर मजलां, तारण तिरण जहाज' गीत प्रस्तुत किया। श्री महेन्द्र खाब्या एवं सुश्री कृपा खाब्या के वक्तव्य के बाद आचार्यवर का संक्षिप्त उद्‌बोधन हुआ। आचार्यवर ने कहा--'आज हम मुख्य रूप से मांगीलालजी के लिए लांगच आए हैं।' आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक गांववासियों ने बीड़ी, तम्बाकू, शराब जैसे व्यसनों को छोड़ा। लांगच से पुनः चटावटी होते हुए आचार्यवर भीमगढ़ पधारे। इस प्रकार पूर्व निर्धारित मात्र तीन किमी. का विहार एक तेरापंथी परिवार की संभाल के लिए करुणामूर्ति आचार्यवर के लगभग तेरह किमी. का हुआ।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में एडवोकेट श्री बंशीलाल लड्ढा ने आचार्यवर के स्वागत में कविता पाठ करते हुए अपनी पुस्तक 'सौ तालों की इक चाबी' पूज्यवर को भेंट की।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'गुरु के पदार्पण से क्षेत्र का भाग्योदय हो जाता है। क्रोध जहर है, मनोविकार है, पागलपन है। इस खतरनाक जहर को अमृत से दूर किया जा सकता है। अहिंसा अमृत है। अहिंसक व क्षमाशील बनकर क्रोध के जहर को निरस्त किया जा सकता है।

परमाराध्य आचार्यवर ने संबोधि के सातवें अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अदत्तादान ऐसा व्रत है, जो महान जनों द्वारा आचरणीय है। दूसरों की भूमि, वस्तु, धन पर जबरन कब्जा करना, हड़पना व हेराफेरी करना चोरी है। जो दिया हुआ नहीं है, उसे लेना चोरी है। चोरी से पाप कर्म का बंधन होता है। सुकृतकामी को कभी चोरी नहीं करनी चाहिए।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'जैसे सूर्य की मौजूदगी में अंधकार नहीं टिकता, वैसे ही अचौर्य व्रत वाले व्यक्ति से विपत्ति दूर रहती है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत के अन्तर्गत प्रामाणिकता व नैतिकता की बात कही। नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा हेतु संत अपनी शक्ति का नियोजन करते हैं।' भीमगढ़ आगमन की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'गुरुदेव तुलसी लगभग छत्तीस वर्ष पूर्व भीमगढ़ और सायं लांगच पधारे। वहां रात्रि प्रवास संपन्न कर पुनः भीमगढ़ पहुंचे। हम भी भीमगढ़ होकर चटावटी और फिर लांगच होकर पुनः भीमगढ़ आए हैं। एक तरह से हमने काफी पुनरावृत्ति की है। भीमगढ़वासियों में ईमानदारी की चेतना जागे और यहां के लोग सदाचार का जीवन जीएं।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

सामान्यतः दस खुले घरों में लगभग बीस-पचीस लोग निवास करते हैं। आचार्यवर के पदार्पण के अवसर पर लगभग नब्बे चौकों वाले मूल बाईस घरों के लगभग सवा सौ लोग अपने गांव में पहुंचे। स्थानीय लोगों के कथनानुसार तेरापंथी समाज की शत-प्रतिशत उपस्थिति रही। स्थानकवासी समाज के सभी अट्‌ठाईस घर खुले और प्रायः सदस्य अपने गांव पहुंचे। हजार घरों की बस्ती वाले इस गांव में उत्सव जैसा वातावरण रहा। रात्रि में स्वागत का कार्यक्रम चला। आचार्यवर ने सबको पारिवारिक सेवा करवाई और धार्मिक प्रेरणा प्रदान की। प्रायः सभी जैन परिवारों के घरों का स्पर्श किया। उस समय श्रद्धालु जन मानों गलियों में आचार्यवर के साथ हो गए। पूज्यवर का भीमगढ़ में प्रवास श्री मांगीलाल हिंगड़ के आवास पर हुआ।

भोग पर हो योग का नियंत्रण

२८ नवम्बर। अणुव्रत अनुशास्ता शान्तिदूत आचार्यवर की यात्रा भीमगढ़ से प्रारंभ हुई। पहला पड़ाव जाडाणा का खेड़ा में हुआ। सात तेरापंथी सहित आठ जैन परिवारों वाले इस गांव में आचार्यवर ने सबके घरों में चरण रखे और पारिवारिक सेवा करवाई। वहां से आप लसाड़ियाखुर्द पधारे। गांव में तेरापंथ की एकमात्र श्रद्धालु श्राविका संतोषदेवी गुगलिया ने अपने दत्तक पुत्र भीखमचन्द व पूरे गुगलिया परिवार के साथ पूज्यवर का स्वागत किया। परिवार की बहनों की गीत प्रस्तुति के अनंतर श्री मुकेश गुगलिया ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। संतोषबाई ने पांचसूत्री अणुव्रत संकल्प पत्र पूज्यवर को भेंट किए। आचार्यवर के पदार्पण, प्रवास व प्रवचन से भावविभोर संतोषबाई ने कहा--'गुरुदेव ! आप पधार्‌या म्हारे तो चौमासो हुग्यो।'

जाडाणा व लसाड़ियाखुर्द का संक्षिप्त प्रवास संपन्न कर लगभग दस किमी. का विहार कर आचार्यवर मुरोलीखुर्द पधारे। 'के तो बाबा रामदेवजी के तो बाबा महाश्रमणजी'--रुणेचा के बाबा रामदेव के भक्त बुनकर समाज के

इस तरह के बड़े बैनर सहित कई बैनर लगे हुए थे। मुरोली ठिकाणे के ठाकुर श्री नाहरसिंहजी भाटी ने भी आचार्यवर का स्वागत किया। यहां आचार्यवर का प्रवास पीतलिया सदन में हुआ।

रावले के पास चौक में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में गांव के प्रायः सभी वर्गों के लोगों की समवेत उपस्थिति के बीच परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--' अध्यात्म की साधना में ब्रह्मचर्य की साधना का विशेष महत्त्व है। इस साधना के लिए इन्द्रिय संयम एवं मन पर नियंत्रण करना अत्यन्त आवश्यक है। औरत, पैसा, रूप व सांसारिक भ्रमजाल में फंसा व्यक्ति संन्यासी कहलाने का अधिकारी नहीं है। ब्रह्मचर्यव्रत की साधना के लिए दृष्टि संयम व खाद्य संयम सहयोगी बनता है। ब्रह्मचारी के चरणों में तो देवता भी प्रणत होते हैं।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'शीलरहित व्यक्ति के लिए मोक्षरूपी दरवाजा मजबूती के साथ बन्द रहता है। एक मुनि के लिए पूर्ण ब्रह्मचर्य की साधना अनिवार्य है। जबकि एक सद्गृहस्थ के लिए स्वदार संतोष व्रत उपयोगी है। जब इस सीमा का उल्लंघन होता है, वहां पति-पत्नी के बीच दरार उत्पन्न हो सकती है। आज की सबसे बड़ी जरूरत यह है कि भोग पर योग व संयम का नियंत्रण रहे।' आचार्यवर ने मुरोली की जनता से अहिंसा को आत्मसात करने व नशामुक्त जीवन जीने का आह्वान किया। कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का प्रेरक उद्बोधन हुआ।

सायं आचार्यवर ने सभी जैन परिवारों के साथ अन्य भक्तों के घर पगल्या किया। रात्रि में पारिवारिक सेवा करवाई व विविध त्याग-प्रत्याख्यान करवाए।

ऊंचा के लोग ऊंचा जीवन जीएं

२६ नवम्बर। आज प्रातः श्रद्धेय आचार्यवर ने मुरोली से पहुंना के लिए विहार किया। मार्गवर्ती मरमी माताजी मंदिर में पूज्यवर का पदार्पण हुआ। मंदिर प्रबंधन ने पूज्यप्रवर का स्वागत किया। बताया गया कि लकवाग्रस्त लोग यहां स्वास्थ्य की मनौती मांगने के लिए आते हैं। मन्दिर से प्रस्थान कर आचार्यवर मरमी गांव में पधारे। सड़क मार्ग से लगभग एक किमी. भीतर स्थित इस गांव के लोगों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। गांव के विजयवर्गीय गोत्र के परिवारों की श्रद्धा भावना उल्लेखनीय थी। पूज्य आचार्यवर ने उनके घरों का स्पर्श किया।

मरमी के निकटवर्ती जालमपुरा व गोकुल गांव में आचार्यवर ने वहां के लोगों के अनुरोध पर उन्हें संबोधित किया। पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने बीड़ी, तम्बाकू, शराब आदि दुर्व्यसनों का परित्याग किया।

इसके पश्चात आचार्यवर ऊंचा गांव में पधारे। गांव के साहू महासभा (तेली समाज), ब्राह्मण समाज, गोस्वामी परिषद, ख्वाजा कमेटी के सदस्यों ने पूज्य आचार्यवर का स्वागत किया। यहां का एकमात्र तेरापंथी ओस्तवाल परिवार अतिशय प्रसन्न था। इस परिवार के वरिष्ठतम सदस्य एक सौ एक वर्षीय श्री हरकलालजी ओस्तवाल पूज्यप्रवर के दर्शन कर प्रमुदित थे। वे तेरापंथ के चार आचार्यों के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त करने वाले बन गए। श्री राजेन्द्र ओस्तवाल ने पूज्यवर के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए।

बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामवासियों को नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा देते हुए आचार्यवर ने ऊंचा गांव के निवासियों को अपने गांव के नाम के अनुरूप अपने जीवन को उन्नत बनाने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यवर की प्रेरणा से गांव के अनेक लोगों ने नशे से मुक्त होने का संकल्प व्यक्त किया और त्याग के फलस्वरूप देखते ही देखते वहां गुटखा के पाउचों और बीड़ी के बंडलों का ढेर लग गया। पूज्य आचार्यवर यहां के रावले में भी पधारे। वहां ठाकुर लक्ष्मणसिंहजी ने आचार्यवर का 'मुजरो' किया।

इस प्रकार एक ही दिन में अनेक गांवों का स्पर्श करते हुए पूज्य आचार्यप्रवर ने लगभग सवा दस बजे पहुंना गांव में प्रवेश किया। गांव में पूज्यप्रवर का ऐतिहासिक स्वागत हुआ। यहां के कार्यक्रम की विस्तृत रिपोर्ट देखें आगामी विज्ञप्ति में।

स्मृति-संबल

- सरदारशहर निवासी श्रीमती बैद का स्वर्गवास हो गया। वे सरदारशहर के सुप्रसिद्ध मंगलचन्द भंवरलाल बैद परिवार के वरिष्ठ सदस्य श्री जंवरीमल बैद की धर्मपत्नी थीं। इस परिवार की दवाओं के दान की उत्कट भावना रही है। लंबे समय से आज भी वह क्रम अनवरत चल रहा है। जंवरीमल बिना डॉक्टरी पढ़े भी किसी डिग्रीधारी डॉक्टर से कम नहीं थे। चिकित्सा के क्षेत्र में उनका दीर्घकालिक अनुभव था। उनके बड़े भाई भंवरलालजी विद्याप्रेमी थे। उन्हें हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत का गहरा ज्ञान था। अनेक साधु-साध्वियों को उन्होंने अध्यापन कराया। परिवार धार्मिक और प्रतिष्ठित है। श्राविकाजी बड़ी धर्मनिष्ठ थीं। उनके सुपुत्र डॉ. जतन बैद भी निष्ठा से सेवा करते हैं।
- नोखामंडी निवासी श्रीमती कानीदेवी सुराणा (धर्मपत्नी-स्व. लालचन्दजी सुराणा) का स्वर्गवास हो गया। अन्तिम समय में उन्हें साध्वी काव्यलताजी का योग मिला और ग्यारह मिनट का उन्हें संथारा आया। मुनि नयकुमारजी एवं साध्वी आशावतीजी उनके संसारपक्षीय परिवार से संबद्ध हैं। कानीदेवी धार्मिक वृत्ति वाली श्राविका थीं। उन्होंने दो वर्षीतप सहित एक से नौ तक की लड़ी व अन्य तपस्याएं कीं। पिछले पचीस वर्षों से रात्रि चौविहार, नवकारसी व पांच सामायिक का उनका नित्यक्रम था। आजीवन जमीकन्द और पांच तिथियों को हरियाली का त्याग था। पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- थामला निवासी श्रीमती झमकूदेवी सोनी (धर्मपत्नी-स्व.सोहनलालजी सोनी) का स्वर्गवास हो गया। वे बारहव्रत धारिणी धर्मनिष्ठ श्राविका थीं। पति-पत्नी दोनों के मन में संघ व संघपति के प्रति गहरी निष्ठा थी।
- लाडनूं निवासी श्रीमती अमानदेवी सिंघी (धर्मपत्नी-स्व. लिखमीचन्दजी सिंघी) का देहावसान हो गया। वे श्रद्धाशील एवं धर्मपरायण श्राविका थीं। बचपन से ही माता-पिता के साये से बंचित होने के बावजूद उनकी धर्मनिष्ठा उल्लेखनीय थी। मात्र बारह वर्ष की उम्र से जमीकन्द सेवन, पांच तिथियों को हरियाली, रात्रि भोजन का परिहार व नवकारसी, संतदर्शन, सामायिक, जप आदि उनका नित्यक्रम था। यह उनके द्वारा प्रदत्त संस्कारों का ही प्रभाव है कि परिवार के उच्च शिक्षित उनके पुत्र-पौत्र आदि संस्कारी और व्यसनमुक्त हैं। श्राविकाजी को कहानी और ढालें सुनाने का शौक था। सैंकड़ों ढालें और थोकड़े उन्हें कंठस्थ थे। अध्यक्ष के रूप में उन्होंने लाडनूं महिला मंडल को गति व ऊर्जा प्रदान की। अस्वस्थता की स्थिति में महाश्रमणीजी के संदेशों से उन्हें बहुत बल मिला।
- छापर निवासी श्रीमती धन्नीदेवी सेठिया (धर्मपत्नी-स्व. चौथमलजी सेठिया) का अहमदाबाद में स्वर्गवास हो गया। पांच वर्ष पूर्व आचार्य महाप्रज्ञ से 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त श्रीमती धन्नीदेवी सेठिया सेवाभावी श्राविका थीं। उनके परिवार की ओर से प्रतिवर्ष 'जय तुलसी विद्या पुरस्कार' प्रदान किया जाता है। पूरा सेठिया परिवार धार्मिक भावना से ओतप्रोत है। इस परिवार के लगभग सौ सदस्य देश के विभिन्न संभागों में व्यवसायरत एवं संघ सेवा में तत्पर हैं।
- इन्दौर निवासी श्री रणजीतमलजी गादिया का निधन हो गया। मूल पेटलावद निवासी गादिया परिवार श्रद्धाशील परिवार है। रणजीतमलजी ने वर्षों तक अध्यक्ष के रूप में तेरापंथी सभा को अपनी सेवाएं दीं। पलासिया स्थित नये तेरापंथ भवन के निर्माण में भी उनका योगदान रहा। उनके भवन 'गुरुकृपा' में साधु-साध्वियों के चतुर्मास हुए। उनकी धर्मपत्नी, पुत्र और पुत्रवधू में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- जसोल निवासी मुम्बई प्रवासी कुमारी हेमलता भंसाली (सुपुत्री श्री गौतम भंसाली) का बाईस वर्ष की अल्पायु में निधन हो गया। अन्तिम समय में अत्यन्त शारीरिक वेदना की स्थिति में भी वह 'ऊं भिक्षु जय भिक्षु' के जप में तल्लीन रही। कुछ माह पूर्व रींछेड़-कांकरोली के बीच मार्ग-सेवा का लाभ लिया। प्रतिभासंपन्न हेमलता साध्वी संगीतप्रभाजी की संसारपक्षीया भतीजी, साध्वी उदितयशाजी की ममेरी बहन व मुमुक्षु भावना की ज्येष्ठ भगिनी थी।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव पर चिकित्सा सेवा का विश्व कीर्तिमान

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन मुम्बई द्वारा एक ही दिन

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/09-11 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2009-2011
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

में एक ही स्थान पर २६० पाइल्स पीड़ितों के निःशुल्क आप्रेशन करवा कर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया गया। २० नवम्बर २०११ को 'विश्व पाइल्स दिवस' पर डॉ. जी. डी. पॉल फाउण्डेशन द्वारा संचालित वाई. एम. टी. आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज से जुड़े अस्पताल में समायोजित इस विशाल उपक्रम हेतु ४१२ पाइल्स पीड़ितों को परीक्षण के पश्चात् चिकित्सा योग्य पाया गया। डॉ. महेश सिंघवी के नेतृत्व में १६० चिकित्सकों और सहयोगियों की मदद से दो दिनों में इन सभी रोगियों का सफल आप्रेशन किया गया, जिनमें से प्रथम दिन २६० रोगियों का ऑप्रेशन एक विश्व कीर्तिमान है। इससे पहले यह कीर्तिमान लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड में १३६ ऑप्रेशन के नाम दर्ज था। इस विशाल समायोजन में फाउण्डेशन को तेरापंथी सभा मुम्बई, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम मुम्बई, सुराणा ग्रुप ऑफ हास्पिटल्स, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, स्थानीय जीवनविज्ञान अकादमी का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। फाउण्डेशन के अध्यक्ष श्री भीखमचन्द नाहटा, तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री विनोद कच्छारा, डॉ. डी. सी. सुराणा, श्री के. एल. परमार, श्री चिमन सिंघवी, श्री माणक धींग, श्री सलिल लोढ़ा, श्री प्यारचन्द मेहता, श्री पारस तातेड़ आदि सैंकड़ों कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम का परिणाम विश्व कीर्तिमान के रूप में सामने आया। फाउण्डेशन द्वारा अपने आराध्य की अभिवंदना में समायोजित यह विशाल उपक्रम समाचार पत्रों और न्यूज चैनलों में प्रमुखता के साथ प्रकाशित और प्रसारित हुआ।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- स्व. श्री हंसराजजी बैंगानी, लाडनूं (पूर्व अध्यक्ष-पूर्वांचल सभा, कोलकाता) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जतनदेवी बैंगानी (पूर्व अध्यक्ष-महिला मंडल कोलकाता), सुपुत्र व पुत्रवधू नरेन्द्र-बेला, अभिषेक-नीलू, सुपौत्री मनीषा, कृति एवं सुपौत्र ऋषि बैंगानी द्वारा प्रदत्त।

५१००/- स्व. श्री राजमलजी सिंघवी (आशाहोली-भीलवाड़ा) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पानबाई, सुपुत्र व पूत्रवधू बाबूलाल-दिलखुश, हस्तीमल-पुष्पा, सुपौत्र व पौत्रवधू मुकेशकुमार-कविता, प्रशान्तकुमार-खुशी, हितेशकुमार, प्रपौत्र आदित्य, अनिकेत सिंघवी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती घीसीबाई (धर्मपत्नी-श्री भीकमचन्दजी सुन्देचा, शेखावास-पाली) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू हेमराज-सुमित्रा, प्रसन्नचन्द-प्रमिला, सुपौत्र व पौत्रवधू अरिहंतकुमार-भानू, अभयकुमार, सुपौत्री अंजली, अपेक्षा, प्रपौत्र मोक्षु सुन्देचा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री मूलचन्दजी हगामीलालजी सांखला (केलवा) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती तीजीदेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू नरेश-शर्मिला, सुपौत्र चिराग, गुंजन, सुपौत्री नेहा सांखला, बदलापुर-मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री राजेन्द्रकुमारजी भोलावत पोरवाल की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला, सुपुत्र व पुत्रवधू प्रमोद-प्रीति, विकास-शेतल, सुपौत्री व सुपौत्र सृष्टि, तन्मय, देवांश पोरवाल परिवार, उदयपुर द्वारा प्रदत्त।

- विज्ञप्ति के जिन वार्षिक सदस्यों का शुल्क समाप्त हो चुका है, वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण अतिशीघ्र करवा लें। नवीनीकरण करवाते समय, पते में परिवर्तन कराते समय अथवा विज्ञप्ति प्राप्त न होने की सूचना देते समय अपनी ग्राहक संख्या का उल्लेख अवश्य करें। पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा आमेट
पो. चारभुजारोड-३१३ ३३२, जि. राजसमन्द (राजस्थान) फोन : ०६६८००५५३८१, ०६३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

•

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**